

International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 6.5 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

रीतिकालीन नीतिकाव्य: विविध आयामों का आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ. नीरज गुप्ता

असिस्टेंट प्रोफेसर – हिंदी, गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, कर्वी चित्रकूट

सारांश

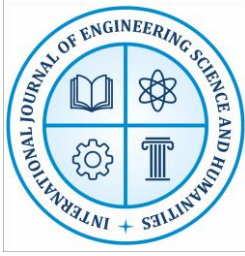
रीतिकाल (1643–1843 ई.) को प्रायः शृंगार, नायिका-भेद और दरबारी विलास का काल माना जाता है, जिसके कारण इसकी नीतिपरक धारा आलोचना में उपेक्षित रही है। प्रस्तुत शोध-पत्र रीतिकालीन नीतिकाव्य का विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक पद्धति से अध्ययन करता है। इसमें वृंद, गिरिधर कविराय, दीनदयाल गिरि, बैताल और घाघ जैसे प्रमुख नीतिकवियों के योगदान का मूल्यांकन किया गया है तथा नीतिकाव्य के आठ आयामों—नैतिक, सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक, लौकिक, शैक्षिक, आध्यात्मिक और मानवीय—की पहचान की गई है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यह काव्य अस्थिर सामंती परिवेश में जनसामान्य को व्यवहार-कुशलता, संयम, परोपकार और विवेक का मार्ग दिखाने वाला लोकोन्मुखी काव्य था। दोहा, कुंडलिया और छप्पय जैसे छंद, दृष्टांत और अन्योक्ति का प्रयोग तथा सहज ब्रजभाषा इसकी प्रभावोत्पादकता के प्रमुख आधार हैं। शोध यह भी रेखांकित करता है कि नीतिकाव्य के कुछ अंश तत्कालीन सामंती मानसिकता से प्रभावित हैं, अतः इसका आलोचनात्मक पुनर्पाठ आवश्यक है। निष्कर्षतः, समकालीन मूल्य-संकट के संदर्भ में रीतिकालीन नीतिकाव्य एक सरल, संक्षिप्त और प्रासंगिक नैतिक मार्गदर्शिका सिद्ध होता है।

मुख्य शब्द : रीतिकाल, नीतिकाव्य, वृंद, गिरिधर कविराय, दीनदयाल गिरि, जीवन-मूल्य, लोकचेतना, दोहा, कुंडलिया

1. प्रस्तावना

रीतिकाल का संक्षिप्त परिचय

हिंदी साहित्य के इतिहास में संवत् 1700 से 1900 (लगभग 1643–1843 ई.) तक के कालखंड को रीतिकाल कहा जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस काल का नामकरण इसकी प्रधान प्रवृत्ति—लक्षण-ग्रंथों की रचना और काव्य-रीति के निरूपण—के आधार पर किया (शुक्ल, 2018)। यह काल मुगल सत्ता के उत्कर्ष और फिर उसके विघटन का काल था, जिसमें छोटे-छोटे राजदरबार कवियों के आश्रयदाता बने। विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने इसी शृंगार-प्रधानता को देखकर इसे 'शृंगारकाल' कहना अधिक उपयुक्त माना (मिश्र, 2016)।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 6.5 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

रीतिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

रीतिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं—लक्षण-ग्रंथों की रचना, शृंगार रस की प्रधानता, नायिका-भेद, अलंकार-प्रियता, आश्रयदाताओं की प्रशंसा, मुक्तक शैली और ब्रजभाषा का परिष्कृत प्रयोग। डॉ. नगेन्द्र ने इस काव्यधारा को रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त—तीन वर्गों में बाँटकर देखा है (नगेन्द्र, 2015)। किंतु इन मुख्य धाराओं के समानांतर भक्ति, वीर और नीति की धाराएँ भी निरंतर प्रवाहित होती रहीं (नगेन्द्र एवं हरदयाल, 2018)।

नीतिकाव्य की संकल्पना एवं स्वरूप

'नीति' शब्द संस्कृत की 'नी' धातु से बना है, जिसका अर्थ है—ले जाना या मार्ग दिखाना। अतः नीतिकाव्य वह काव्य है जो मनुष्य को उचित आचरण और विवेकपूर्ण व्यवहार की ओर ले जाए। भारतीय परंपरा में इसका स्रोत पंचतंत्र, हितोपदेश, विदुरनीति, चाणक्यनीति और भर्तृहरि के नीतिशतक तक जाता है (द्विवेदी, 2018)। हिंदी में नीतिकाव्य प्रायः दोहा, सोरठा, कुंडलिया और छप्पय जैसे मुक्तक छंदों में लिखा गया, जिनमें अनुभव का सार संक्षिप्त सूक्ति के रूप में रखा जाता है (वर्मा, 2015)।

अध्ययन की आवश्यकता एवं उद्देश्य

रीतिकाल का मूल्यांकन प्रायः उसकी शृंगारिकता और दरबारी चरित्र के आधार पर हुआ है, जिससे उसकी नीतिपरक धारा उपेक्षित रह गई। इस अध्ययन के उद्देश्य हैं—(1) रीतिकालीन नीतिकाव्य की पृष्ठभूमि और स्वरूप को स्पष्ट करना; (2) प्रमुख नीतिकवियों के योगदान का विश्लेषण करना; (3) नीतिकाव्य के विविध आयामों और जीवन-मूल्यों की पहचान करना; (4) उसकी भाषिक-काव्यगत विशेषताओं का विवेचन करना; तथा (5) समकालीन समाज में उसकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना। अध्ययन की पद्धति विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक है।

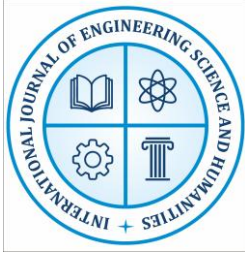
2. रीतिकालीन नीतिकाव्य : स्वरूप एवं पृष्ठभूमि

रीतिकालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश

रीतिकाल का समाज सामंती ढाँचे पर टिका था। औरंगजेब के बाद मुगल साम्राज्य कमजोर हुआ और देशी रियासतें, मराठा शक्ति तथा अंततः ईस्टइंडिया कंपनी राजनीतिक मंच पर उभरीं। दरबारों में विलासिता थी, पर जनसाधारण अकाल, कर-भार, युद्ध और अस्थिरता से त्रस्त था (चतुर्वेदी, 2018)। रामविलास शर्मा ने इस काल में भी हिंदी प्रदेश की जातीय और लोकचेतना की निरंतरता को रेखांकित किया है (शर्मा, 2016)। ऐसे अस्थिर परिवेश में व्यक्ति को व्यवहार-कुशलता, सावधानी और आत्मरक्षा का मार्ग दिखाने वाला नीतिकाव्य स्वाभाविक रूप से लोकप्रिय हुआ।

नीतिकाव्य की प्रमुख विशेषताएँ

- **उपदेशात्मकता** : कवि का मुख्य लक्ष्य पाठक को सद्मार्ग दिखाना है।
- **अनुभव-आधारितता** : नीति शास्त्रीय से अधिक लौकिक अनुभव पर आधारित है।
- **मुक्तक शैली** : प्रत्येक छंद अपने में पूर्ण और स्वतंत्र होता है।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 6.5 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

- **दृष्टांत-प्रधानता** : कथन को प्रकृति, पशु-पक्षी या दैनिक जीवन के उदाहरण से पुष्ट किया जाता है।
- **सरलता और स्मरणीयता** : छंद इतने सहज हैं कि लोकोक्ति बनकर जनजीवन में घुल गए।

रीतिकाल में नीति-चेतना का विकास

रीतिकालीन नीति-चेतना के बीज भक्तिकाल में ही मौजूद थे। कबीर, तुलसी और रहीम के दोहों में नीति के तत्व प्रचुर मात्रा में हैं; विशेषतः रहीम ने लोकव्यवहार और मानवीय संबंधों पर जो दोहे लिखे, वे रीतिकालीन नीतिकवियों के लिए आदर्श बने (मिश्र एवं रजनीश, 2018)। रीतिकाल में यह धारा अधिक स्वतंत्र और व्यवस्थित रूप में सामने आई। वृंद ने सात सौ नीति-दोहों की सतसई रची, गिरिधर कविराय ने कुंडलिया छंद को नीति का प्रमुख वाहक बनाया और दीनदयाल गिरि ने अन्योक्ति के माध्यम से नीति को नई कलात्मकता दी (गुप्त, 2017)। हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार यह धारा रीतिकाल की उस लोकोन्मुखी परंपरा का अंग है जो दरबार की चमक से अलग जनजीवन से जुड़ी रही (द्विवेदी, 2017)।

नीतिकाव्य और तत्कालीन जीवन का संबंध

रीतिकालीन नीतिकाव्य अपने युग का दर्पण है। इसमें राजदरबार की चाटुकारिता, धन-लोलुपता, कुसंगति, कपट और मित्रों की विश्वासघातकता के प्रति सावधान करने वाले स्वर बार-बार मिलते हैं। ये प्रसंग स्पष्ट करते हैं कि कवि अपने समय की विसंगतियों से भलीभाँति परिचित थे। बच्चन सिंह ने रीतिकाल को केवल शृंगार तक सीमित देखने की प्रवृत्ति की आलोचना करते हुए उसके यथार्थवादी पक्ष की ओर ध्यान दिलाया है (सिंह, 2018)। नीतिकाव्य इसी यथार्थवादी पक्ष का सबसे सशक्त प्रमाण है।

3. रीतिकालीन नीतिकाव्य के प्रमुख कवि एवं कृतियाँ

वृंद का नीतिकाव्य

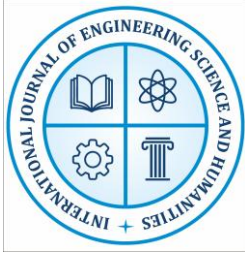
वृंद (लगभग 1643–1723 ई.) मेड़ता (जोधपुर) के निवासी थे और कृष्णगढ़ नरेश राजसिंह के गुरु माने जाते हैं। उनकी 'वृंद सतसई' (1704 ई.) में लगभग सात सौ नीतिपरक दोहे हैं; इसके अतिरिक्त 'शृंगार शिक्षा', 'भावपंचाशिका' और 'यमक सतसई' भी उनकी रचनाएँ हैं (शुक्ल, 2018)। आचार्य शुक्ल ने उनकी ख्याति मुख्यतः सूक्तिकार के रूप में मानी है। वृंद के दोहों में अभ्यास, विद्या, विवेक और सत्संगति का महत्त्व बार-बार प्रकट होता है—

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान। रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान॥

इस दोहे में कुँ की रस्सी से पत्थर पर पड़े निशान का दृष्टांत देकर निरंतर अभ्यास की महिमा सिद्ध की गई है। वृंद की विशेषता यह है कि वे गहन जीवन-सत्य को घरेलू और परिचित उपमानों से जोड़ देते हैं (त्रिपाठी, 2016)।

गिरिधर कविराय का नीतिकाव्य

गिरिधर कविराय (अठारहवीं शताब्दी) कुंडलिया छंद के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं। उनके जीवन-वृत्त के विषय में निश्चित सूचनाएँ कम हैं, पर उनकी कुंडलियाँ उत्तर भारत के गाँव-गाँव में कंठस्थ रही हैं (वर्मा,



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 6.5 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

2015)। गिरिधर की नीति अत्यंत व्यावहारिक है—वे लाठी, कंबल, धन, मित्र और शत्रु जैसे ठोस विषयों पर बात करते हैं। उनकी प्रसिद्ध कुंडलिया का आरंभ है—

बिना बिचारे जो करै, सो पाछे पछिताय। काम बिगारै आपनो, जग में होत हँसाय॥

विचारहीन कर्म के दुष्परिणाम का यह चित्रण आज भी उतना ही सार्थक है। उनकी कुंडलियों में 'कह गिरिधर कविराय' की छाप उन्हें एक आत्मीय लोक-शिक्षक का रूप देती है (सिंह, 2017)।

दीनदयाल गिरि का नीतिकाव्य

दीनदयाल गिरि (लगभग 1802–1858 ई.) काशी के निवासी थे और रीतिकाल के अंतिम चरण के महत्त्वपूर्ण नीतिकवि हैं। 'अन्योक्ति कल्पद्रुम', 'अनुराग बाग', 'दृष्टांत तरंगिणी' और 'वैराग्य दिनेश' उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं (नगेन्द्र एवं हरदयाल, 2018)। उनकी सबसे बड़ी विशेषता अन्योक्ति-विधान है—वे भौरे, हंस, कोयल, चंदन या पपीहे को संबोधित करके वास्तव में मनुष्य को सीख देते हैं। इससे उनकी नीति उपदेश की रूखाई से बचकर काव्यात्मक सौंदर्य से युक्त हो जाती है (मिश्र, 2016)।

अन्य प्रमुख नीतिकाव्यकार एवं उनकी रचनाएँ

- **बिहारी** : 'बिहारी सतसई' मुख्यतः शृंगारिक है, पर उसके नीति-दोहे—जैसे धन के मद पर 'कनक कनक तें सौगुनी मादकता अधिकाय'—अत्यंत प्रसिद्ध हैं (द्विवेदी, 2017)।
- **बैताल** : छप्पय छंद में लोकनीति कहने वाले कवि, जिनकी पंक्तियाँ 'बैताल कहै विक्रम सुनौ' की छाप से पहचानी जाती हैं।
- **घाघ और भड्डरी** : कृषि, मौसम और गृहस्थ जीवन से जुड़ी लोकनीति के कवि, जिनकी कहावतें किसानों के व्यावहारिक ज्ञान का कोश हैं (शर्मा, 2018)।
- **रसनिधि और भूपति** : सतसई परंपरा में नीति और शृंगार को मिलाकर लिखने वाले कवि।

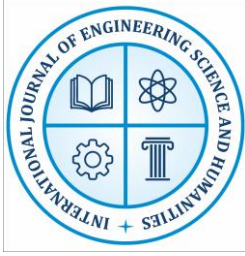
4. रीतिकालीन नीतिकाव्य के विविध आयाम

नैतिक एवं चारित्रिक आयाम

नीतिकाव्य का केंद्रीय सरोकार व्यक्ति का चरित्र-निर्माण है। सत्य, विनम्रता, क्षमा, धैर्य और आत्मसंयम को यहाँ मनुष्य की वास्तविक पूँजी माना गया है। वृंद कपट के विरुद्ध चेतावनी देते हुए कहते हैं कि कपट से किया गया व्यवहार काठ की हाँडी के समान है, जो दूसरी बार चूल्हे पर नहीं चढ़ती। यह दृष्टि व्यक्ति के आचरण को उसकी सामाजिक साख से जोड़ती है (शुक्ल, 2017)।

सामाजिक आयाम

नीतिकवियों ने समाज में व्याप्त दिखावे, धनमद, चापलूसी और गुणहीनता की तीखी आलोचना की। गिरिधर के अनुसार संसार में गुण के ग्राहक तो हजारों हैं, पर गुण के बिना किसी को आदर नहीं मिलता। यह कथन जन्म या पद के स्थान पर गुण और योग्यता को सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार बनाता है (चतुर्वेदी, 2018)।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 6.5 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

पारिवारिक आयाम

परिवार भारतीय समाज की आधारभूत इकाई है, अतः नीतिकाव्य में माता-पिता की सेवा, संतान की सही परवरिश, पति-पत्नी के आपसी विश्वास और भाइयों के सौहार्द पर विशेष बल है। कवि गृहस्थ को मितव्ययिता और दूरदर्शिता की सीख देते हैं, ताकि संकट के समय परिवार सुरक्षित रहे (गुप्त, 2017)।

राजनीतिक एवं राजधर्म संबंधी आयाम

दरबारी परिवेश में रहते हुए भी नीतिकवियों ने राजा के कर्तव्यों पर निर्भीक होकर लिखा। प्रजापालन, न्याय, योग्य मंत्रियों की नियुक्ति, चाटुकारों से सावधानी और शत्रु को कमजोर न समझना—ये राजनीति-विषयक प्रमुख सूत्र हैं। यह परंपरा चाणक्य और विदुर की राजनीति से जुड़ती है, किंतु ब्रजभाषा में इसे लोकसुलभ रूप मिला (द्विवेदी, 2018)।

लोकजीवन एवं लोकानुभव का आयाम

रीतिकालीन नीतिकाव्य का अधिकांश ज्ञान ग्रंथों से नहीं, बल्कि खेत-खलिहान, बाजार, यात्रा और गृहस्थी के अनुभवों से उपजा है। घाघ की कहावतें वर्षा, बीज और पशुधन से जुड़ा व्यावहारिक ज्ञान देती हैं, जबकि गिरिधर की कुंडलियाँ यात्री और गृहस्थ की रोज़मर्रा की ज़रूरतों को संबोधित करती हैं (शर्मा, 2018)।

शैक्षिक एवं व्यवहारिक आयाम

विद्या को नीतिकवियों ने सर्वोच्च धन माना। वृंद के एक दोहे के अनुसार सरस्वती का भंडार ऐसा अपूर्व है कि वह खर्च करने पर बढ़ता है और न खर्च करने पर घटता है। यह विचार ज्ञान के साझा करने को ही उसकी वृद्धि का मार्ग बताता है—जो आज की शिक्षा-दृष्टि के भी अनुकूल है (त्रिपाठी, 2016)।

धार्मिक एवं आध्यात्मिक आयाम

नीतिकाव्य में धर्म कर्मकांड की अपेक्षा आचरण के रूप में आता है। ईश्वर-स्मरण, संसार की नश्वरता, अहंकार का त्याग और वैराग्य के स्वर विशेषतः दीनदयाल गिरि के 'वैराग्य दिनेश' में मिलते हैं। यहाँ आध्यात्मिकता जीवन से पलायन नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित करने का साधन है (मिश्र, 2017)।

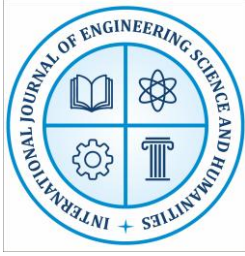
मानवीय मूल्यों का आयाम

समग्र रूप से नीतिकाव्य मनुष्य को मनुष्य बनाने का काव्य है। करुणा, परोपकार, कृतज्ञता, मित्रता और समानता जैसे मूल्य इसके केंद्र में हैं। नामवर सिंह के अनुसार साहित्य का मूल्यांकन उसकी ऐतिहासिक भूमिका और मानवीय सरोकारों के आलोक में किया जाना चाहिए (सिंह, 2016); इस कसौटी पर नीतिकाव्य रीतिकाल का सबसे मानवीय पक्ष सिद्ध होता है।

5. रीतिकालीन नीतिकाव्य में जीवन-मूल्य एवं लोकचेतना

सत्य, सदाचार एवं संयम

नीतिकवियों की दृष्टि में सत्य और सदाचार वह आधार हैं जिन पर व्यक्ति का पूरा जीवन टिका है। वाणी के संयम पर विशेष बल है—वृंद कहते हैं कि जब तक कोई बोलता नहीं, तब तक भला-बुरा एक-सा दिखता



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 6.5 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

है; वसंत आने पर ही कौए और कोयल का अंतर पता चलता है। यह दोहा बताता है कि मनुष्य की पहचान उसकी वाणी और आचरण से होती है (शुक्ल, 2018)।

परोपकार एवं मानवता

परोपकार को नीतिकाव्य में जीवन की सार्थकता का माप माना गया है। वृक्ष, नदी और मेघ जैसे प्रकृति-उपमानों के माध्यम से कवि यह संदेश देते हैं कि सज्जन अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जीते हैं। यह दृष्टि भक्तिकाल के रहीम से चली आ रही उस परंपरा का विस्तार है जिसमें दूसरों के हित को ही सच्चा धर्म माना गया (मिश्र एवं रजनीश, 2018)।

कर्तव्य-बोध

राजा का प्रजा के प्रति, संतान का माता-पिता के प्रति, मित्र का मित्र के प्रति और गृहस्थ का समाज के प्रति कर्तव्य—नीतिकाव्य इन सबको स्पष्ट करता है। यहाँ अधिकार की अपेक्षा कर्तव्य पर बल है, जो भारतीय जीवन-दृष्टि की मूल विशेषता है (पांडेय, 2015)।

संगति, व्यवहार एवं विवेक

सत्संगति और कुसंगति का प्रश्न नीतिकाव्य का स्थायी विषय है। कवि मानते हैं कि मनुष्य जैसी संगति करता है, वैसा ही बन जाता है। इसके साथ अवसर पहचानने, समय देखकर बोलने और अपने मन का भेद हर किसी से न कहने जैसे व्यावहारिक सूत्र भी दिए गए हैं। गिरिधर की कुंडलियाँ इस व्यवहार-विवेक की श्रेष्ठ उदाहरण हैं (सिंह, 2018)।

लोकमंगल की भावना

आचार्य शुक्ल ने लोकमंगल को साहित्य की सर्वोच्च कसौटी माना था (शुक्ल, 2017)। रीतिकालीन नीतिकाव्य इस कसौटी पर खरा उतरता है, क्योंकि उसका लक्ष्य व्यक्ति के कल्याण के साथ समाज का सामूहिक हित भी है। पुरुषोत्तम अग्रवाल ने हिंदी की लोकपरंपरा में एक देशज विवेक-चेतना की निरंतरता देखी है (अग्रवाल, 2009); नीतिकाव्य इसी देशज विवेक का लोकसुलभ रूप है, जो दरबार से बाहर जनसामान्य के बीच जीवित रहा।

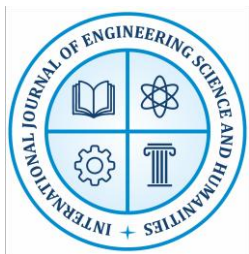
6. रीतिकालीन नीतिकाव्य की भाषिक एवं काव्यगत विशेषताएँ

भाषा एवं शैली

रीतिकालीन नीतिकाव्य की भाषा ब्रजभाषा है, किंतु यह दरबारी कवियों की अलंकृत ब्रजभाषा से अधिक सहज और बोलचाल के निकट है। इसमें अवधी, राजस्थानी, बुंदेली और फ़ारसी के प्रचलित शब्द स्वाभाविक रूप से घुले हैं। शैली उपदेशात्मक होते हुए भी संवादात्मक है—कवि पाठक से सीधे बात करता है (वर्मा, 2015)।

दोहा एवं अन्य छंदों का प्रयोग

नीतिकवियों ने विषय के अनुसार छंदों का चयन किया:



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 6.5 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

छंद	संरचना	प्रमुख कवि	नीतिकाव्य में उपयोगिता
दोहा	13-11 मात्राओं के दो चरण	वृंद, बिहारी, रहीम	संक्षिप्त सूक्ति; याद रखना सरल
सोरठा	दोहे का उलटा (11-13)	वृंद, रहीम	विविधता के लिए
कुंडलिया	एक दोहा + एक रोला	गिरिधर कविराय, दीनदयाल गिरि	विस्तार से उदाहरण सहित तर्क
छप्पय	रोला के चार + उल्लाला के दो चरण	बैताल	ओजपूर्ण, कथात्मक नीति

भगीरथ मिश्र ने रीतिकालीन छंद-विधान को काव्यशास्त्रीय परंपरा के आलोक में विश्लेषित करते हुए दोहे को मुक्तक काव्य का सबसे सफल छंद माना है (मिश्र, 2017)।

लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग

नीतिकाव्य और लोकोक्ति के बीच दोतरफ़ा संबंध है। एक ओर कवियों ने प्रचलित कहावतों को छंद में ढाला, दूसरी ओर उनके अनेक दोहे स्वयं लोकोक्ति बन गए। 'करत करत अभ्यास के' या 'बिना बिचारे जो करै' जैसी पंक्तियाँ आज भी बोलचाल में कहावत की तरह प्रयुक्त होती हैं (सिंह, 2017)।

दृष्टांत, उपमा एवं प्रतीक विधान

दृष्टांत अलंकार नीतिकाव्य का प्राण है। दोहे की पहली पंक्ति में सिद्धांत और दूसरी में उसका प्रमाण देने वाला उदाहरण—यह संरचना बार-बार मिलती है। रस्सी और पत्थर, कौआ और कोयल, काठ की हाँड़ी, नकटे को दर्पण दिखाना—ये उपमान दैनिक जीवन से लिए गए हैं। दीनदयाल गिरि ने अन्योक्ति के माध्यम से प्रतीक-विधान को कलात्मक ऊँचाई दी (नगेन्द्र, 2015)।

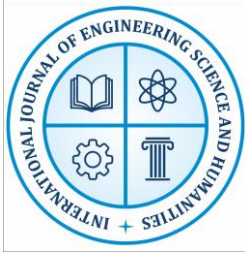
सरलता, संक्षिप्तता एवं प्रभावोत्पादकता

'गागर में सागर' भरने की क्षमता नीतिकाव्य की सबसे बड़ी शक्ति है। दो पंक्तियों में पूरा जीवनानुभव समा जाता है। सरल शब्दावली, लयात्मकता और तुक इसे स्मरणीय बनाते हैं, जिससे यह मौखिक परंपरा में पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित रहा (त्रिपाठी, 2016)।

7. समकालीन संदर्भ में रीतिकालीन नीतिकाव्य की प्रासंगिकता

वर्तमान सामाजिक जीवन में नीतिमूल्यों की उपयोगिता

आज का समाज तीव्र भौतिक प्रगति के बावजूद मूल्य-संकट से गुजर रहा है। उपभोक्तावाद, प्रतिस्पर्धा और तात्कालिक लाभ की प्रवृत्ति ने संयम, धैर्य और ईमानदारी जैसे मूल्यों को पीछे धकेल दिया है। ऐसे समय में वृंद का अभ्यास-संदेश, गिरिधर का 'विचार कर कर्म करने' का सूत्र और दीनदयाल गिरि का



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 6.5 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

अहंकार-त्याग का संदेश नए अर्थ ग्रहण करते हैं। मैनेजर पांडेय के अनुसार साहित्य की ऐतिहासिक समझ तभी पूर्ण होती है जब हम उसे वर्तमान की आवश्यकताओं से जोड़कर पढ़ें (पांडेय, 2015)।

मानवीय संबंधों में प्रासंगिकता

परिवारों का विघटन, मित्रता में स्वार्थ और सामाजिक संबंधों का औपचारिक होते जाना आज की बड़ी समस्याएँ हैं। नीतिकाव्य सच्चे और कपटी मित्र की पहचान, वाणी के संयम और कृतज्ञता के जो सूत्र देता है, वे इन संबंधों को फिर से मानवीय बनाने में सहायक हैं (शर्मा, 2016)।

नैतिक संकट और नीतिकाव्य

भ्रष्टाचार, सत्ता का दुरुपयोग, दिखावा और सूचना के अतिरेक में विवेक का लोप—ये आधुनिक नैतिक संकट के रूप हैं। नीतिकाव्य का राजधर्म-विषयक चिंतन आज के लोकतांत्रिक नेतृत्व के लिए भी प्रासंगिक है: न्याय, जनहित और चाटुकारों से सावधानी। सोशल मीडिया के युग में 'बिना बिचारे जो करै' की चेतावनी तो मानो आज के लिए ही लिखी गई हो (सिंह, 2016)।

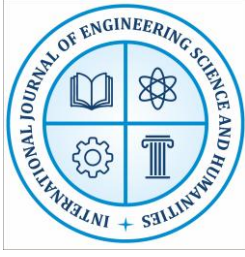
आधुनिक समाज के लिए नीतिकाव्य का संदेश

नीतिकाव्य का मूल संदेश है—विवेकपूर्ण, संतुलित और परोपकारी जीवन। विद्यालयी पाठ्यक्रमों में इसकी उपस्थिति इसी कारण बनी हुई है कि यह कम शब्दों में चरित्र-शिक्षा देता है। हालाँकि आलोचनात्मक दृष्टि से यह भी स्वीकारना होगा कि नीतिकाव्य के कुछ अंश—जैसे स्त्री और निम्न वर्ग विषयक कतिपय कथन—तत्कालीन सामंती मानसिकता से प्रभावित हैं और आज के समतामूलक मूल्यों से मेल नहीं खाते (चतुर्वेदी, 2018)। अतः इसका पुनर्पाठ विवेक के साथ होना चाहिए: शाश्वत मूल्यों को ग्रहण करना और युगीन सीमाओं को पहचानना।

8. निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि रीतिकाल को केवल शृंगार और दरबारी विलास का काल मानना अधूरा मूल्यांकन है। इस काल में वृंद, गिरिधर कविराय, दीनदयाल गिरि, बैताल और घाघ जैसे कवियों ने एक समृद्ध नीतिकाव्य-परंपरा विकसित की, जो संस्कृत नीतिसाहित्य और भक्तिकालीन लोकनीति की निरंतरता में थी। इस काव्य के नैतिक, सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक, लौकिक, शैक्षिक, आध्यात्मिक और मानवीय—आठों आयाम परस्पर जुड़े हुए हैं और मिलकर एक समग्र जीवन-दृष्टि रचते हैं (नगेन्द्र एवं हरदयाल, 2018; गुप्त, 2017)।

साहित्यिक दृष्टि से नीतिकाव्य ने दोहा और कुंडलिया जैसे छंदों को लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचाया, दृष्टांत और अन्योक्ति की कला को निखारा तथा ब्रजभाषा को जनसुलभ रूप दिया। सामाजिक दृष्टि से इसने अस्थिर सामंती युग में सामान्य जन को आत्मरक्षा, व्यवहार-कुशलता और नैतिक दृढ़ता का मार्ग दिखाया। यह वह काव्य है जो दरबार में नहीं, जनता की स्मृति में जीवित रहा (द्विवेदी, 2017; सिंह, 2018)। मूल्य-संकट से जूझते आधुनिक समाज के लिए रीतिकालीन नीतिकाव्य एक सरल, संक्षिप्त और प्रभावी नैतिक मार्गदर्शिका है। आवश्यकता इस बात की है कि इसका आलोचनात्मक पुनर्पाठ किया जाए—इसके



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 6.5 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

शाश्वत मूल्यों को शिक्षा, परिवार और सार्वजनिक जीवन में स्थान दिया जाए तथा इसकी युगीन सीमाओं को विवेकपूर्वक पहचाना जाए। इसी संतुलित दृष्टि से रीतिकालीन नीतिकाव्य आज भी लोकमंगल का सशक्त माध्यम बन सकता है (शुक्ल, 2017; शर्मा, 2018)।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, पुरुषोत्तम. (2009). अकथ कहानी प्रेम की : कबीर की कविता और उनका समय. राजकमल प्रकाशन.
2. गुप्त, गणपतिचंद्र. (2017). हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (खंड 1). लोकभारती प्रकाशन.
3. चतुर्वेदी, रामस्वरूप. (2018). हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास. लोकभारती प्रकाशन.
4. त्रिपाठी, विश्वनाथ. (2016). हिंदी साहित्य का सरल इतिहास. ओरिएंट ब्लैकस्वान.
5. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. (2017). हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास. राजकमल प्रकाशन.
6. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. (2018). हिंदी साहित्य की भूमिका. राजकमल प्रकाशन.
7. नगेन्द्र. (2015). रीतिकाव्य की भूमिका. नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
8. नगेन्द्र, & हरदयाल (सं.). (2018). हिंदी साहित्य का इतिहास. मयूर पेपरबैक्स.
9. पांडेय, मैनेजर. (2015). साहित्य और इतिहास-दृष्टि. वाणी प्रकाशन.
10. मिश्र, भगीरथ. (2017). हिंदी काव्यशास्त्र का इतिहास. विश्वविद्यालय प्रकाशन.
11. मिश्र, विद्यानिवास, & रजनीश, गोविंद (सं.). (2018). रहीम ग्रंथावली. वाणी प्रकाशन.
12. मिश्र, विश्वनाथप्रसाद. (2016). हिंदी साहित्य का अतीत (भाग 2 : शृंगारकाल). वाणी प्रकाशन.
13. वर्मा, धीरेन्द्र (प्रधान सं.). (2015). हिंदी साहित्य कोश (भाग 2). ज्ञानमंडल लिमिटेड.
14. शर्मा, रामविलास. (2016). भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश (खंड 1). किताबघर प्रकाशन.
15. शर्मा, रामविलास. (2018). लोकजागरण और हिंदी साहित्य. वाणी प्रकाशन.
16. शुक्ल, रामचंद्र. (2017). चिंतामणि (भाग 1). लोकभारती प्रकाशन.
17. शुक्ल, रामचंद्र. (2018). हिंदी साहित्य का इतिहास. लोकभारती प्रकाशन.
18. सिंह, नामवर. (2016). इतिहास और आलोचना. राजकमल प्रकाशन.
19. सिंह, बच्चन. (2018). हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास. राधाकृष्ण प्रकाशन.
20. सिंह, विजयपाल. (2017). रीतिकालीन साहित्य कोश. राजकमल प्रकाशन.